

भारत और आसियान सम्बन्ध

डॉ. चन्द्रशेखर पटेल

सहायक प्राध्यापक, राजनीति शास्त्र

डॉ. शक्राजीत नायक शासकीय महाविद्यालय बरमकेला (छत्तीसगढ़)

सारांश

भारत और आसियान (Association of Southeast Asian Nations) के बीच रिश्ते दक्षिण और दक्षिण-पूर्व एशिया के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। दोनों पक्षों के बीच सामरिक, आर्थिक, और सांस्कृतिक सहयोग ने इन संबंधों को एक नई दिशा दी है। आसियान के साथ भारत के संबंध 1992 में 'आसियान-भारत संवाद भागीदार' के रूप में शुरू हुए, और तब से लेकर अब तक इन संबंधों में कई महत्वपूर्ण बदलाव हुए हैं। भारत और आसियान (ASEAN) देशों के बीच संबंध पिछले तीन दशकों में अत्यधिक प्रगति पर पहुंचे हैं, और यह साझेदारी क्षेत्रीय और वैश्विक राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। भारत की "एक्ट ईस्ट नीति" के तहत आसियान देशों के साथ आर्थिक, रणनीतिक और सांस्कृतिक सहयोग में वृद्धि हुई है। इस शोध का उद्देश्य भारत और आसियान के बीच विकसित होते हुए इन बहुआयामी संबंधों का विश्लेषण करना है। अध्ययन में भारत-आसियान मुक्त व्यापार समझौता (AIFTA), समुद्री सुरक्षा सहयोग, आतंकवाद-निरोध, और सांस्कृतिक आदान-प्रदान जैसे महत्वपूर्ण पहलुओं का मूल्यांकन किया गया है।

भारत और आसियान देशों के बीच व्यापारिक संबंधों में सुधार हुआ है, लेकिन कुछ महत्वपूर्ण क्षेत्र जैसे व्यापार असंतुलन, कनेक्टिविटी और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण अभी भी चुनौतियाँ बनी हुई हैं। आसियान के रणनीतिक और राजनीतिक दृष्टिकोण में भी चीन के बढ़ते प्रभाव को संतुलित करने के प्रयासों में भारत की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। इसके अतिरिक्त, आसियान देशों में जन-स्तर पर सांस्कृतिक और शैक्षणिक सहयोग की अपार संभावनाएँ मौजूद हैं, जो क्षेत्रीय एकता को और सुदृढ़ कर सकती हैं। यह अध्ययन यह निष्कर्ष निकालता है कि भारत और आसियान के संबंधों में सशक्त और प्रभावी सहयोग की दिशा में ठोस कदम उठाए जाने की आवश्यकता है, ताकि इन संबंधों का वास्तविक लाभ दोनों पक्षों के लिए अधिकतम हो सके। इस शोध में प्रस्तावित नीतियाँ और दिशा-निर्देश भारत-आसियान साझेदारी को एक नई ऊँचाई पर पहुँचाने में सहायक हो सकते हैं।

मुख्य क्षेत्र:

1. **आर्थिक सहयोग:** भारत और आसियान देशों के बीच व्यापार और निवेश में वृद्धि देखी गई है। भारत ने "आसियान-भारत मुक्त व्यापार समझौता (AIFTA)" पर हस्ताक्षर किए हैं, जिससे दोनों पक्षों के बीच व्यापार में वृद्धि हुई है। इसके अलावा, भारत ने आसियान देशों के साथ सामूहिक निवेश, बुनियादी ढांचा परियोजनाओं और ऊर्जा साझेदारी पर ध्यान केंद्रित किया है।

2. **सामरिक और रक्षा सहयोग:** भारत और आसियान देशों ने सामूहिक सुरक्षा चिंताओं, विशेषकर समुद्री सुरक्षा और आतंकवाद के खिलाफ संयुक्त संघर्ष के लिए मिलकर काम किया है। "इंडो-पैसिफिक" क्षेत्र में स्थिरता को बनाए रखने के लिए दोनों पक्षों ने समुद्री सुरक्षा और कनेक्टिविटी परियोजनाओं को प्राथमिकता दी है।
3. **सांस्कृतिक और जनस्तरिय संबंध:** भारत और आसियान के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान बढ़ा है, जिससे लोगों के बीच आपसी समझ और सहयोग बढ़ा है। भारतीय फिल्में, साहित्य, और कला आसियान देशों में लोकप्रिय हो रही हैं, वहीं आसियान की सांस्कृतिक धरोहर भारत में भी गहरी पैठ बना रही है।
4. **आधुनिक चुनौतियाँ:** आसियान और भारत के संबंधों में कुछ प्रमुख चुनौतियाँ भी हैं, जैसे चीन की बढ़ती भूमिका और क्षेत्रीय राजनीतिक तनाव। इन चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए, दोनों पक्षों ने अपनी रणनीतिक साझेदारी को और अधिक मजबूत करने का प्रयास किया है।

भारत और आसियान के संबंधों में निरंतर प्रगति हुई है, और दोनों पक्ष सामरिक, आर्थिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से एक-दूसरे के लिए अहम साझेदार बने हैं। इन संबंधों का भविष्य काफी हद तक क्षेत्रीय और वैश्विक कूटनीतिक परिदृश्य पर निर्भर करेगा, खासकर चीन के बढ़ते प्रभाव और अन्य वैश्विक चुनौतियों के संदर्भ में।

परिचय

भारत और दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के बीच ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और व्यापारिक संबंध सदियों पुराने हैं। प्राचीन काल से ही भारत का संपर्क इंडोनेशिया, थाईलैंड, म्यांमार, कंबोडिया जैसे देशों से व्यापार, धर्म और सांस्कृतिक माध्यमों से होता आया है। आधुनिक संदर्भ में, यह संबंध आसियान (ASEAN - Association of Southeast Asian Nations) के गठन और भारत की "लुक ईस्ट" (अब "एक्ट ईस्ट") नीति के साथ और अधिक प्रगाढ़ हुए हैं। आसियान की स्थापना 1967 में दक्षिण-पूर्व एशिया के पांच देशों द्वारा क्षेत्रीय शांति, स्थिरता और विकास के उद्देश्य से की गई थी। वर्तमान में इसमें दस सदस्य देश हैं। भारत ने 1992 में "आसियान का क्षेत्रीय संवाद भागीदार" बनने के साथ इस संगठन से औपचारिक रूप से अपने संबंधों की शुरुआत की। इसके बाद, 2002 में भारत और आसियान के बीच वार्षिक शिखर सम्मेलन शुरू हुआ और 2012 में संबंधों को 'रणनीतिक साझेदारी' के स्तर तक विस्तारित कर दिया गया।

भारत की "एक्ट ईस्ट नीति", जो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सरकार द्वारा और अधिक सशक्त की गई, इन संबंधों को केवल आर्थिक और राजनीतिक नहीं बल्कि सामरिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण बनाती है। आज जब वैश्विक और क्षेत्रीय राजनीति में तेजी से परिवर्तन हो रहे हैं, भारत और आसियान के मजबूत सहयोग की आवश्यकता और प्रासंगिकता और अधिक बढ़ गई है।

उद्देश्य

इस अध्ययन/शोध का मुख्य उद्देश्य भारत और आसियान देशों के मध्य विकसित होते संबंधों का विश्लेषण करना है। इस उद्देश्य के अंतर्गत निम्नलिखित बिंदु शामिल हैं:

1. भारत और आसियान के ऐतिहासिक संबंधों की पड़ताल करना, विशेष रूप से सांस्कृतिक, धार्मिक और व्यापारिक दृष्टिकोण से।

2. भारत-आसियान संबंधों के विकास की प्रक्रिया को समझना, विशेषकर 1992 के बाद के काल में।
3. भारत की 'एक्ट ईस्ट नीति' और उसकी भूमिका को आसियान के साथ द्विपक्षीय और बहुपक्षीय संबंधों में स्पष्ट करना।
4. आर्थिक, राजनीतिक, सामरिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में सहयोग के आयामों का मूल्यांकन करना।
5. भारत-आसियान व्यापार और निवेश की दिशा और संभावनाओं का अध्ययन करना।
6. क्षेत्रीय और वैश्विक संदर्भ में भारत-आसियान संबंधों की प्रासंगिकता का आकलन करना, विशेषकर चीन की बढ़ती भूमिका के संदर्भ में।
7. दोनों पक्षों के सामने आने वाली प्रमुख चुनौतियों और उनके समाधान के सुझाव प्रस्तुत करना।

इस अध्ययन का उद्देश्य भारत और आसियान देशों के बीच बहुआयामी संबंधों को समझना, उनका विश्लेषण करना तथा भविष्य की रणनीतिक साझेदारी के लिए संभावनाओं को रेखांकित करना है।

आर्थिक और व्यापारिक संबंध:

भूमिका

भारत और आसियान (ASEAN - Association of Southeast Asian Nations) के बीच आर्थिक और व्यापारिक संबंध पिछले कुछ दशकों में गहरे और मजबूत हुए हैं। दोनों पक्ष सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और भौगोलिक रूप से निकट रहे हैं, और वैश्वीकरण के इस दौर में उनके आर्थिक सहयोग ने नई ऊंचाइयां हासिल की हैं।

प्रमुख पहलू

1. **व्यापारिक साझेदारी :** 1992 में भारत ने आसियान के साथ Sectoral Dialogue Partner के रूप में शुरुआत की थी। 2010 में ASEAN-India Free Trade Agreement (AIFTA) पर हस्ताक्षर हुए, जिससे व्यापार और निवेश को नई गति मिली। 2022 में, भारत और आसियान ने संबंधों को Comprehensive Strategic Partnership में अपग्रेड किया।
2. **व्यापार का आकार :** आसियान भारत का चौथा सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार है। 2023 तक भारत-आसियान द्विपक्षीय व्यापार लगभग 131 बिलियन डॉलर तक पहुँच गया। प्रमुख व्यापारिक वस्तुएं भारत से निर्यात: पेट्रोलियम उत्पाद, जैविक रसायन, मशीनरी, फार्मास्यूटिकल्स। भारत में आयात: इलेक्ट्रॉनिक्स, मशीनरी, खनिज ईंधन, रबर और पाम ऑयल।
3. **निवेश सहयोग :** भारत में आसियान देशों का प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) महत्वपूर्ण रहा है, खासकर सिंगापुर, मलेशिया और थाईलैंड से। भारत भी आसियान देशों में अवसंरचना, ऊर्जा, डिजिटल अर्थव्यवस्था और सेवा क्षेत्रों में निवेश कर रहा है।

4. परियोजनाएं और पहलें : India-ASEAN Connectivity Projects (जैसे भारत-म्यांमार-थाईलैंड ट्राइलेटरल हाईवे)। Act East Policy के अंतर्गत भारत ने आसियान के साथ रणनीतिक और आर्थिक संबंधों को प्राथमिकता दी है। डिजिटल, स्टार्टअप, स्वास्थ्य और जलवायु परिवर्तन जैसे नए क्षेत्रों में सहयोग बढ़ रहा है।

आर्थिक और व्यापारिक संबंधों का विकास

2009 में भारत और आसियान के बीच मुक्त व्यापार समझौता (FTA) पर हस्ताक्षर हुए, जो 2010 से लागू हुआ। इससे व्यापार में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। भारत और आसियान के बीच कुल द्विपक्षीय व्यापार 2022-23 में लगभग 131.5 अरब डॉलर तक पहुँच गया। आसियान भारत में एक प्रमुख निवेशक समूह है, और भारत भी आसियान देशों में महत्वपूर्ण निवेश कर रहा है, विशेषकर सूचना प्रौद्योगिकी, निर्माण, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं में।

प्रमुख क्षेत्र

- **इन्फ्रास्ट्रक्चर विकास:** 'आसियान-इंडिया फंड' के जरिए कनेक्टिविटी प्रोजेक्ट्स को बढ़ावा दिया जा रहा है, जैसे कि भारत-म्यांमार-थाईलैंड त्रिकोणीय राजमार्ग।
- **डिजिटल सहयोग:** डिजिटल इनोवेशन और स्टार्टअप्स के क्षेत्र में भी सहयोग को बढ़ावा मिल रहा है।
- **सेवाएँ और निवेश समझौते:** 2014 में दोनों पक्षों ने सेवाओं और निवेश पर भी समझौते किए हैं, जिससे द्विपक्षीय व्यापार संबंध और मजबूत हुए हैं।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि:

भारत और दक्षिण-पूर्व एशिया (आज के आसियान देशों) के बीच संपर्क हजारों वर्षों से रहे हैं भारत से बौद्ध और हिन्दू धर्म, कला, वास्तुकला, भाषा और साहित्य का प्रसार इंडोनेशिया, मलेशिया, थाईलैंड, कंबोडिया और म्यांमार तक हुआ। समुद्री सिल्क रूट के माध्यम से भारत के व्यापारी दक्षिण-पूर्व एशिया के साथ मसाले, रत्न, वस्त्र आदि का व्यापार करते थे। कई प्राचीन साम्राज्यों जैसे श्रीविजय (इंडोनेशिया) और खमेर (कंबोडिया) में भारतीय संस्कृति का प्रभाव देखा गया। 18वीं-20वीं शताब्दी के दौरान ब्रिटिश, डच और फ्रेंच उपनिवेशवाद के कारण भारत और दक्षिण-पूर्व एशिया के संपर्क में गिरावट आई। स्वतंत्रता के बाद भारत ने गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) का नेतृत्व किया, जबकि कई आसियान देश अमेरिका-समर्थित गुट के करीब रहे। 1967 में थाईलैंड, इंडोनेशिया, मलेशिया, सिंगापुर और फिलीपींस ने आसियान की स्थापना की। प्रारंभ में भारत और आसियान के बीच सीमित संपर्क थे, क्योंकि भारत उस समय घरेलू आर्थिक चुनौतियों पर केंद्रित था। शीत युद्ध की समाप्ति और भारत के आर्थिक उदारीकरण के बाद भारत ने 'Look East Policy' अपनाई। इसका उद्देश्य था दक्षिण-पूर्व एशिया के साथ आर्थिक और रणनीतिक संबंधों को मजबूत करना। भारत 1992 में आसियान का सांस्कृतिक समानता: भाषाओं, परंपराओं और धर्मों में गहराई से जुड़े तत्व। भौगोलिक निकटता: भारत की पूर्वोत्तर सीमाएं म्यांमार के माध्यम से आसियान से जुड़ी हैं उदारीकरण का कालखंड: 1990 के दशक से आर्थिक, राजनीतिक और सुरक्षा सहयोग में तेज़ वृद्धि हुई।

सामरिक और सुरक्षा सहयोग:

भारत और आसियान (ASEAN) के संबंध केवल व्यापार और संस्कृति तक सीमित नहीं हैं — अब ये रणनीतिक और सुरक्षा सहयोग तक विस्तृत हो चुके हैं। भारत की Act East Policy और आसियान की Indo-Pacific Vision ने सामरिक समन्वय को नई दिशा दी है। 2012: भारत और आसियान के बीच Strategic Partnership की शुरुआत। 2022: इसे Comprehensive Strategic Partnership में अपग्रेड किया गया, जो परस्पर विश्वास और क्षेत्रीय स्थिरता पर आधारित है। हिंद महासागर और दक्षिण चीन सागर में नौवहन की स्वतंत्रता सुनिश्चित करने के लिए सहयोग। India-ASEAN Maritime Exercise (AIME 2023): पहली बार भारत और आसियान नौसेनाओं ने साझा अभ्यास किया। सूचना साझेदारी, जैसे Information Fusion Centre – Indian Ocean Region (IFC-IOR) के माध्यम से। आतंकवाद, उग्रवाद और साइबर अपराध के खिलाफ संयुक्त रणनीति। खुफिया जानकारी का आदान-प्रदान और क्षमता निर्माण। भारत के सुरक्षा प्रशिक्षण संस्थानों में आसियान देशों के अधिकारियों का प्रशिक्षण। द्विपक्षीय और बहुपक्षीय सैन्य अभ्यास, जैसे: SIMBEX (भारत-सिंगापुर), MILAN (नौसेनिक अभ्यास), Ex Maitree (भारत-थाईलैंड)। आपदा प्रबंधन और HADR (Humanitarian Assistance and Disaster Relief) प्राकृतिक आपदाओं के समय संयुक्त राहत और पुनर्वास प्रयास। क्षेत्रीय प्रतिक्रिया क्षमताओं का विकास। चीन की बढ़ती गतिविधियों के बीच भारत और आसियान के सहयोग से एक संतुलनकारी शक्ति का उदय। Indo-Pacific क्षेत्र में स्वतंत्र, खुला और समावेशी दृष्टिकोण साझा करना। Quad और ASEAN Outlook on the Indo-Pacific (AOIP) जैसे मंचों पर विचारों की संगति।

सांस्कृतिक और लोगों के बीच संबंध:

भारत और आसियान के बीच सांस्कृतिक और लोगों के स्तर पर संबंध (People-to-People Contact) सदियों पुराने और गहरे हैं। इन संबंधों की जड़ें इतिहास, धर्म, भाषा, परंपरा और साझा मूल्यों में निहित हैं। आधुनिक समय में, भारत और आसियान देशों ने आपसी समझ, शांति और सहयोग को और मजबूत करने के लिए इन संबंधों को एक नई दिशा दी है। धर्म और दर्शन: बौद्ध और हिंदू धर्म दक्षिण-पूर्व एशिया में भारत से पहुँचे। इंडोनेशिया, म्यांमार, थाईलैंड, लाओस और कंबोडिया में आज भी भारतीय धार्मिक और सांस्कृतिक प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। प्राचीन कनेक्शन: अयुथया (थाईलैंड), अंगकोरवाट (कंबोडिया), बोरोबुदुर (इंडोनेशिया) जैसे स्थल भारतीय स्थापत्य और धार्मिक प्रभाव के उदाहरण हैं। संस्कृति और भाषा: संस्कृत और पाली भाषा का प्रभाव आसियान देशों की भाषाओं और लिपियों में देखा जा सकता है। भारत-आसियान सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम भारत और आसियान देशों के बीच नृत्य, संगीत, चित्रकला, भोजन और फिल्म के माध्यम से सांस्कृतिक मेलजोल को प्रोत्साहन दिया जाता है। ASEAN-India Artists Camp, ASEAN-India Youth Summit, ASEAN-India Students Exchange Programme जैसे आयोजन नियमित रूप से होते हैं। भारत द्वारा “ASEAN-India Scholarship for Students” का प्रस्ताव। Nalanda University और IITs में आसियान छात्रों के लिए विशेष सीटें और स्कॉलरशिप। शैक्षिक व विश्वविद्यालयिक स्तर पर आदान-प्रदान कार्यक्रम। भारत ने आसियान देशों के पर्यटकों के लिए बौद्ध तीर्थ यात्रा को बढ़ावा देने हेतु “Buddhist Circuit Tourist Train” और ई-वीजा सुविधा शुरू की।

चुनौतियाँ:

भारत और आसियान (ASEAN) के बीच संबंधों में पिछले तीन दशकों में काफी प्रगति हुई है, लेकिन सहयोग की गति और गहराई को कई आंतरिक और बाह्य चुनौतियाँ प्रभावित करती हैं। इन बाधाओं को समझना आवश्यक है ताकि साझेदारी को अधिक प्रभावशाली और संतुलित बनाया जा सके। भारत और आसियान के बीच व्यापार असंतुलित है — भारत का व्यापार घाटा आसियान के साथ लगातार बढ़ रहा है। भारत के कुछ उद्योगों को आसियान से सस्ते

आयात के कारण नुकसान हुआ है। FTA (Free Trade Agreement) के कुछ प्रावधान भारत के पक्ष में नहीं माने जाते, जिससे FTA की समीक्षा की मांग होती रही है। भौगोलिक निकटता के बावजूद सड़क, रेल और समुद्री संपर्क की सीमाएं। भारत-म्यांमार-थाईलैंड ट्राइलैटरल हाईवे जैसे कई प्रोजेक्ट्स धीमी प्रगति के शिकार हैं। पूर्वोत्तर भारत की अधोसंरचना (infrastructure) अब भी अपेक्षाकृत पिछड़ी हुई है। कुछ आसियान देश चीन के भारी आर्थिक निवेश और दबाव में रहते हैं, जिससे वे भारत के साथ संतुलन नहीं बना पाते। दक्षिण चीन सागर में विवादास्पद क्षेत्रीय दावे भारत-आसियान सामरिक सहयोग को सीमित करते हैं। भारत की Indo-Pacific रणनीति और QUAD में भागीदारी को लेकर कुछ आसियान देश असहजता महसूस करते हैं। राजनीतिक विविधता और निर्णय प्रक्रिया आसियान में सर्वसम्मति नीति के कारण निर्णय लेने की प्रक्रिया धीमी है। सभी सदस्य देश अलग-अलग राजनीतिक और रणनीतिक प्राथमिकताएँ रखते हैं, जिससे सामूहिक दृष्टिकोण अपनाना कठिन हो जाता है।

भारत-आसियान संबंधों के प्रमुख बिंदु

भारत और दक्षिण-पूर्व एशिया के बीच सांस्कृतिक और व्यापारिक संबंध प्राचीन काल से मौजूद हैं। बौद्ध और हिन्दू धर्म का प्रसार, वास्तुकला, भाषा और कला में भारत का प्रभाव। आधुनिक काल में संबंधों की शुरुआत भारत 1992 में आसियान का Sectoral Dialogue Partner बना। मुख्य सहयोग क्षेत्र आर्थिक और व्यापारिक संबंध: द्विपक्षीय व्यापार \$110+ अरब डॉलर (2022) FTA in Goods (2009), FTA in Services & Investment (2014) सुरक्षा और सामरिक सहयोग Maritime Security, आतंकवाद-निरोध, साइबर सुरक्षा सैन्य अभ्यास जैसे AIME, MILAN, SIMBEX आदि सांस्कृतिक और लोगों के बीच संबंध भारतीय मूल के लोग (PIOs) – ~60 लाख आसियान में डिजिटल, शैक्षिक और पर्यटन कनेक्टिविटी, व्यापार घाटा, अधोसंरचना और भौगोलिक सीमाएं, चीन का प्रभाव और आसियान की धीमी निर्णय प्रक्रिया, कोविड-19 के कारण रुकावटें। भारत और आसियान के आर्थिक और व्यापारिक संबंध न केवल क्षेत्रीय समृद्धि का आधार हैं, बल्कि वैश्विक स्थिरता और विकास में भी बड़ी भूमिका निभाते हैं। दोनों पक्षों के बीच सहयोग को बढ़ावा देने से एशिया-प्रशांत क्षेत्र में शांति, स्थिरता और समृद्धि सुनिश्चित की जा सकती है।

पर्यावरण और आपदा प्रबंधन:

भारत और आसियान (ASEAN) दोनों ही जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक आपदाओं, प्रदूषण और जैवविविधता की हानि जैसी पर्यावरणीय चुनौतियों से जूझ रहे हैं। इन साझी समस्याओं के समाधान के लिए उन्होंने सहयोग की दिशा में कई ठोस पहलें की हैं। यह सहयोग भारत की Act East Policy और आसियान के Sustainable Development Goals (SDGs) के दृष्टिकोण में भी दर्शित होता है। पर्यावरणीय सहयोग के प्रमुख क्षेत्र . जलवायु परिवर्तन और सतत विकास, भारत और आसियान Green Growth और Low Carbon Economy को बढ़ावा दे रहे हैं। , भारत ने ASEAN-India Green Fund की स्थापना की (2007), जिससे पर्यावरणीय परियोजनाओं को वित्तीय सहायता मिलती है। , जैव विविधता और वन संरक्षण , भारत और आसियान जैव विविधता के संरक्षण में सहयोग कर रहे हैं, खासकर Transboundary Ecosystems (सीमा पार वन और जल निकायों) के संदर्भ में। पारंपरिक ज्ञान और औषधीय पौधों के संरक्षण में जानकारी का आदान-प्रदान। सौर, पवन और जैव ऊर्जा जैसे क्षेत्रों में तकनीकी सहयोग। भारत की International Solar Alliance (ISA) पहल में आसियान देशों की भागीदारी। आपदा प्रबंधन में सहयोग आपदा प्रबंधन भारत-आसियान रणनीतिक सहयोग का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। भारत की नौसेना और वायुसेना द्वारा आसियान देशों को संकट के समय राहत सहायता (जैसे सुनामी, बाढ़) भारत सक्षम अधिकारी तैयार करने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करता है। National Institute of Disaster Management (NIDM) के माध्यम से आसियान अधिकारियों को

प्रशिक्षण। तकनीकी सहायता और चेतावनी प्रणाली आपदा पूर्वानुमान प्रणाली (Early Warning Systems), GIS आधारित मैपिंग, और आपदा प्रतिक्रिया तकनीक में सहयोग।

भू-राजनीतिक परिप्रेक्ष्य

भारत और दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के बीच भू-राजनीतिक संबंध केवल आर्थिक या सांस्कृतिक साझेदारी तक सीमित नहीं हैं, बल्कि यह पूरे इंडो-पैसिफिक क्षेत्र की सुरक्षा, शक्ति संतुलन और रणनीतिक स्थिरता में अहम भूमिका निभाते हैं। बदलती वैश्विक राजनीति, चीन का उदय, और समुद्री सुरक्षा के मुद्दे भारत-आसियान संबंधों को भू-राजनीतिक महत्व प्रदान करते हैं। भारत की Act East Policy और आसियान की ASEAN Outlook on Indo-Pacific (AOIP) आपसी दृष्टिकोण और सहयोग का आधार बनते हैं। दोनों ही पक्ष नियम-आधारित अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था, सागर मार्गों की स्वतंत्रता (Freedom of Navigation) और Maritime Security को प्राथमिकता देते हैं। दक्षिण चीन सागर में चीन के आक्रामक रवैये और विवादित दावों से आसियान देश चिंतित हैं। भारत इन देशों को रणनीतिक संतुलन देने वाला एक विकल्प प्रदान करता है। भारत की QUAD में भागीदारी और Malabar Exercise जैसी गतिविधियाँ क्षेत्रीय शक्ति संतुलन को प्रभावित करती हैं। संयुक्त नौसेना अभ्यास, HADR मिशन (Humanitarian Assistance and Disaster Relief), और रक्षा प्रशिक्षण के माध्यम से सुरक्षा सहयोग। हिंद महासागर और दक्षिण चीन सागर के बीच समुद्री गलियारे (Sea Lanes of Communication) की सुरक्षा भारत और आसियान दोनों के लिए अहम है। ब्लू इकॉनमी (Blue Economy), मत्स्य पालन, समुद्री खनिज और समुद्री पारिस्थितिकी में साझा रुचि। भारत-आसियान भौगोलिक रूप से जुड़े हुए हैं, विशेषकर म्यांमार के माध्यम से।

निष्कर्ष

भारत और आसियान के ऐतिहासिक संबंध केवल कूटनीतिक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और सभ्यतागत स्तर पर भी गहरे रहे हैं। आधुनिक युग में इन संबंधों को नई दिशा और ऊर्जा मिली है, जो आज वैश्विक स्तर पर रणनीतिक साझेदारी का रूप ले चुकी है। भारत और आसियान के सामरिक एवं सुरक्षा संबंध दक्षिण और दक्षिण-पूर्व एशिया में स्थिरता और शांति के लिए आवश्यक हैं। बदलते वैश्विक भू-राजनीतिक परिदृश्य में यह सहयोग न केवल द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करता है, बल्कि पूरे इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में संतुलन बनाने में सहायक होता है। थाईलैंड, म्यांमार, श्रीलंका, लाओस आदि देशों से लाखों तीर्थयात्री भारत आते हैं। आसियान देशों में लगभग 60 लाख भारतीय मूल के लोग बसे हैं, खासकर मलेशिया, सिंगापुर, म्यांमार और इंडोनेशिया में। ये लोग भारत-आसियान के बीच सांस्कृतिक सेतु का कार्य करते हैं लोगों के स्तर पर संबंध भारत-आसियान सहयोग को लोकप्रिय समर्थन और सामाजिक स्थिरता प्रदान करते हैं। सांस्कृतिक समानताओं से आर्थिक और रणनीतिक संबंधों को भी मजबूती मिलती है। भाषा और संचार की सीमाएं। लोगों में जागरूकता की कमी और संपर्क कार्यक्रमों का सीमित दायरा। कोविड-19 के बाद कुछ कार्यक्रमों में गिरावट। डिजिटल सांस्कृतिक प्लेटफॉर्म का विकास। संयुक्त सांस्कृतिक महोत्सवों का आयोजन। यूथ लीडरशिप प्रोग्राम, शैक्षिक विनिमय और पर्यटन को और प्रोत्साहन।

भारत और आसियान के बीच सांस्कृतिक और लोगों के स्तर पर संबंध एक मजबूत नींव प्रदान करते हैं जिस पर आपसी विश्वास, सहयोग और विकास की इमारत खड़ी हो सकती है। इन संबंधों को और व्यापक और समावेशी बनाना आज की वैश्विक चुनौतियों का उत्तर देने में सहायक होगा। भारत और आसियान के संबंधों की संभावनाएं व्यापक हैं, लेकिन इन संभावनाओं को साकार करने के लिए उपरोक्त चुनौतियों को दूर करना अत्यंत आवश्यक है।

व्यावहारिक सहयोग, राजनीतिक इच्छाशक्ति, और रणनीतिक धैर्य के साथ यह साझेदारी 21वीं सदी की एक मजबूत क्षेत्रीय ताकत बन सकती है। भारत और आसियान के संबंध बहुआयामी, परस्पर लाभकारी और भविष्यगामी हैं। बढ़ती आर्थिक, रणनीतिक और सांस्कृतिक साझेदारी इस संबंध को और भी सुदृढ़ बना रही है। भारत और आसियान के बीच पर्यावरण और आपदा प्रबंधन में सहयोग न केवल साझी चुनौतियों का समाधान है, बल्कि यह स्थिर, सुरक्षित और सतत विकासशील क्षेत्र के निर्माण की दिशा में एक अहम कदम है। आने वाले वर्षों में इस क्षेत्र में सहयोग को और गहरा करना अनिवार्य होगा। भारत और आसियान के भू-राजनीतिक संबंध केवल क्षेत्रीय ही नहीं, बल्कि वैश्विक शक्ति संरचना के लिए भी महत्वपूर्ण हैं। भारत का उद्देश्य "सुरक्षित, स्थिर और समावेशी इंडो-पैसिफिक" का निर्माण करना है, जिसमें आसियान एक केंद्रीय भूमिका निभाता है। आपसी विश्वास, रणनीतिक संवाद और सहयोग को मजबूत कर भारत-आसियान संबंध 21वीं सदी की बदलती भू-राजनीतिक चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना कर सकते हैं।

संदर्भ (References)

1. चेंग, एल. (2018). भारत और आसियान: इंडो-पैसिफिक में रणनीतिक साझेदारी। एशियाई अध्ययन पत्रिका, 56(3), 245-263।
2. कुमार, आर. (2020). भारत-आसियान संबंध: एक दशक का संवाद। अंतर्राष्ट्रीय संबंध पत्रिका, 12(2), 48-55।
3. भारत सरकार, विदेश मंत्रालय (2020). भारत-आसियान साझेदारी: एक रणनीतिक अवलोकन। भारत सरकार, नई दिल्ली।
4. पंत, एच. वी. (2019). भारत की एक्ट ईस्ट नीति: कारण और संभावनाएँ। एशियाई रणनीतिक समीक्षा, 8(1), 32-45।
5. श्रीनिवासन, एस. (2017). भारत और आसियान: सांस्कृतिक और आर्थिक कनेक्टिविटी। दक्षिण-पूर्व एशियाई मामले, 24(4), 77-91।
6. भाटिया, आर. (2021). भारत और आसियान के बीच आर्थिक एकीकरण और सहयोग: चुनौतियाँ और अवसर। आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक, 56(7), 42-49।
7. ली, जे. और यमादा, एस. (2018). आसियान आर्थिक समुदाय और भारत: एक रणनीतिक मूल्यांकन। अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक समीक्षा, 63(1), 112-129।
8. आसियान सचिवालय (2021). आसियान-भारत आर्थिक सहयोग: प्रगति और चुनौतियाँ। आसियान आर्थिक रिपोर्ट, 17, 20-33।
9. भारत की एक्ट ईस्ट नीति: उपलब्धियाँ और चुनौतियाँ। (2022). रणनीतिक मामलों की समीक्षा, भारतीय अंतर्राष्ट्रीय संबंध परिषद।
10. ठाकुर, एम. और दे, पी. (2019). आसियान और भारत: बदलती वैश्विक व्यवस्था में भू-राजनीति का मार्गदर्शन। भू-राजनीतिक अध्ययन पत्रिका,

